AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN:2320-3714
Volume 3 Issue 3
September 2022
Impact Factor:11.9
Subject Humanities

औरंगजेब की मृत्यु के बाद भारत में मुगल शासन के पतन, मुद्रा की उत्पत्ति, महत्व और आवश्यकताएं पर एक अध्ययन

Abhimanyu Sharma,
Research Scholar,
University of Technology, Jaipur
Dr. Alim Akhtar Khan
Supervisor,
University of Technology, Jaipur

DECLARATION: I ASAN AUTHOR OF THIS PAPER / ARTICLE, HEREBY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BYME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDINGCOPYRIGHT/PATENT/ OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANYOF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THEREASON OF CONTENT AMENDMENT/ OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE/UPDATES, IHAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION. FOR ANYPUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETEDECLARATION OF THE AUTHOR ATTHE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE.

सार:

इस अध्ययन में हम पर ध्यान केंद्रित करते हैं औरंगजेब की मृत्यु के बाद भारत में मुगल शासन के पतनए मुद्रा की उत्पत्तिए महत्व और आवश्यकताएं पर एक अध्ययन।

औरंगजेब के बेटे बहादुर शाह प्रथम ने अपने पिता की धार्मिक नीतियों को निरस्त कर दिया और प्रशासन में सुधार करने का प्रयास किया। "हालांकि, 1712 में उनकी मृत्यु के बाद, मुगल राजवंश अराजकता और हिंसक झगड़ों में डूब गया। अकेले 1719 में, चार सम्राट क्रमिक रूप से सिंहासन पर चढ़े"।

इतिहासकारों ने एक सदी के विकास और समृद्धि के बाद, 1707 और 1720 के बीच मुगल साम्राज्य के तेजी से पतन के लिए कई स्पष्टीकरण दिए हैं। राजकोषीय दृष्टि से, सिंहासन ने अपने मुख्य अधिकारियों, अमीरों (रईसों) और उनके सहयोगियों को भुगतान करने के लिए आवश्यक राजस्व खो दिया।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume3 Issue3
September 2022
Impact Factor:11.9
Subject Humanities

प्रस्तावना

मुगल शासकों के दो महान वंशों के वंशज थे। अपनी माता की ओर से वे चीन और मध्य एशिया के कुछ हिस्सों पर शासन करने वाले मंगोल शासक चंगेज खान (मृत्यु 1227) के वंशज थे। अपने पिता की ओर से वे ईरान, इराक और आधुनिक तुर्की के शासक तैमूर (मृत्यु 1404) के उत्तराधिकारी थे। हालाँकि, मुगलों को मुगल या मंगोल कहलाना पसंद नहीं था। ऐसा इसलिए था क्योंकि चंगेज खान की स्मृति असंख्य लोगों के नरसंहार से जुड़ी थी। यह उज्बेग्स, उनके मंगोल प्रतियोगियों के साथ भी जुड़ा हुआ था। दूसरी ओर, मुगलों को अपने तैमूर वंश पर गर्व था, कम से कम इसलिए नहीं क्योंकि उनके महान पूर्वज ने 1398 में दिल्ली पर कब्जा कर लिया था। उन्होंने अपनी वंशावली को चित्रमय रूप से मनाया, प्रत्येक शासक को तैमूर और खुद की एक तस्वीर मिल रही थी।

मुगल साम्राज्य के छठे शासक औरंगजेब आलम गीर भारतीय इतिहास में सबसे अधिक नफरत करने वाले राजा हैं। उन्होंने लगभग पचास वर्षों तक शासन किया, 1658 से 1707 तक, ब्रिटिश उपनिवेशवाद से पहले भारत में अंतिम महान साम्राज्यवादी शक्ति। कई लोगों के अनुसार, उन्होंने भारत को राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से नष्टकर दिया था। अनुरांगजेब की मृत्यु के बाद उनके तीन बेटों के बीच उत्तराधिकार का युद्ध हुआ। यह सबसे बड़े भाई, प्रिंस मुअज्जम की जीत में समाप्त हुआ। साठ साल के राजकुमार ने बहादुरशाह के नाम से सिंहासन संभाला।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN:2320-3714
Volume3 Issue3
September 2022
Impact Factor:11.9
Subject Humanities

बहादुरशाह (1707 ए.डी.-1712 ए.डी.)

बहादुरशाह ने समझौता और सुलह की नीति का पालन किया और राजपूतों, मराठों, बुंदेलों, जाटों और सिखों को समझाने की कोशिश की। उसके शासन काल के दौरान मराठा और सिख अधिक शक्तिशाली बन गए। उसे सिखों के विद्रोह का भी सामना करना पड़ा। बहादुर शाह की मृत्यु 1712 में हुई। उत्तराधिकार के युद्ध, जो मुगलों के बीच एकनियमित विशेषताथी, बहादुर शाह की मृत्यु के बाद और अधिक तीव्र हो गई थी। यह विशेष रूप से इसलिए था क्योंकि रईस बहुत शक्तिशाली हो गए थे। रईसों के विभिन्न गुटोंने उच्चपदों पर कब्जा करने के लिए प्रति द्वंद्वीदावेदारों को सिंहासन का समर्थन किया।

जहाँदारशाह (1712 ए.डी.-1713 ए.डी.)

बहादुर शाह जो सफल हुआ जहां दार शाह कमजोर और अक्षम था। वह उनके द्वारा नियंत्रित था और केवल एक वर्ष के लिए शासन कर सकता था।

फर्रुखसियर (1713 ए.डी.-1719 ए.डी.)

फर्रुखसियर सैन्य बलों की मदद से सिंहासन पर चढ़े, जिन्हें लोकप्रिय रूप से 'राजा निर्माता' कहा जाता था। वह सैन्य बलों द्वारा नियंत्रित था जो मुगल सत्ता के पीछे वास्तविक अधिकार थे।

AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume 3 Issue 3
September 2022
Impact Factor: 11.9
Subject Humanities

मोहम्मदशाह (1719 ए.डी.-1748 ए.डी.)

मुहम्मद शाह का लगभग ३० वर्षों का शासन काल (१७१९-१७४८ ई.) साम्राज्य को बचाने का आखिरी मौका था। जब उनका शासन शुरू हुआ, तब भी लोगों के बीच मुगल प्रतिष्ठा एक महत्वपूर्ण राजनीतिक शक्ति थी। एक मजबूत शासक राजवंश को बचा सकता था।

नादिरशाहकाआक्रमण

अपने अक्षम शासकों, कमजोर प्रशासन और कमजोर सैन्य शक्ति के साथ भारत की स्थिति ने विदेशी आक्रमणकारियों को आकर्षित किया। फारसी शासक नादिर शाह ने 1739 में पंजाब पर आक्रमण किया। मोहम्मद शाह आसानी से पराजित और कैद हो गए।

मुगल साम्राज्य को पारंपरिक रूप से कहा जाता है कि इस की स्थापना 1526 मेंबाबरद्वारा की गई थी, जो आज के उजबेकिस्तान का योद्धा है, जिसने पड़ोसी सफाविद और तुर्क साम्राज्य से सहायता प्राप्त की, दिल्ली के सुल्तान इब्राहिम लोधी को हराने के लिए प्रथम युद्ध में पानीपत, और ऊपरी भारत के मैदानी इलाकों को ढहाने के लिए साम्राज्य की सामूहिक संपत्ति का आधार कृषि कर था, जिसे तीसरे मुगल बादशाह अकबर ने स्थापित किया था। इनकरों, जो एक किसान कृषक के आधे से अधिक उत्पादन के लिए थे, उन्हें अच्छी तरह से विनियमित चांदी मुद्रा में भुगतान किया गया था, और किसानों और कारीगरों को बड़ेबाजारों में प्रवेश करने का कारण बना। 17वीं शताब्दी के दौरान साम्राज्य द्वारा बनाई गई सापेक्ष शांति भारत के आर्थिक विस्तार की कहानी है।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN:2320-3714
Volume3 Issue3
September 2022
Impact Factor:11.9
Subject Humanities

हिंद महासागर में यूरोपी य उपस्थिति की बर्गिंग, और भारतीय कच्चे और तैयार उत्पादों के लिए इसकी बढ़ती मांगने मुगल अदालतों में अभी भी अधिक धन पैदा किया। मुगल अभिजात वर्ग के बीच अधिक विशिष्ट खपत थी, जिस के परिणाम स्वरूप विशेष रूप से शाहजहाँ के शासन काल के दौरान चित्रकला, साहित्यिकरूपों, वस्त्रों और वास्तु कला का अधिकसंर क्षण हुआ। दक्षिणए शिया में मुगल संयुक्तराष्ट्रशिक्षा, विज्ञान और सांस्कृतिक संगठन की विश्व धरोहर स्थल हैं: आगराका किला, फतेहपुर सीकरी, लालकिला, हुमायूंकामकबरा, लाहौरकाकिला, शालीमारबाग और ताजमहल, जिसे "भारतमेंमुस्लिमकलाकाआभूषण" और एक के रूप में वर्णित किया गया है। दुनिया की विरासत की सार्व भौमिक रूप से प्रशंसित कृतियों इतिहास इस संदेह से परेसाबित हुआ किस दियों से विकसित और विकसित हुआ हर साम्राज्य अपनेहीक ब्रखोदने वाले थे। सक्षम शासकों अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ द्वारा प्रदान की गई मजबूत नींव औरं गजेब के शासन काल के दौरान बिगड़ ने लगी। मुगल साम्राज्य अपने मूल में एक "युद्ध-राज्य" था। इसने एक केंद्रीकृत प्रशासनिक प्रणाली विकसित करने की मांग की, जिस की जीवन शक्ति अंततः अपनी सैन्यशक्ति पर निर्भर थी। सम्राट इस संरचना के शीर्ष पर खड़ा था, उस का अधिका रमुख्य रूप से उसकी सैन्य शक्ति पर था। उनके नीचे इस संरचना का दूसरा सब से महत्वपूर्ण तत्व सैन्य अभिजातवर्ग था।

18वीं शताब्दी में विथिंगमुग़ल साम्राज्य सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, अकबर ने अपनी मनसबदारी प्रणाली के माध्यम से इस अभिजातवर्ग का आयोजन किया था, जिस का अर्थथा अभिजात वर्ग का एक सैन्य संगठन।

AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN:2320-3714
Volume3 Issue3
September 2022
Impact Factor:11.9
Subject Humanities

मुगल साम्राज्य के शासकों ने खुद को एक बड़ी और विषम आबादी पर शासन करने के लिए ईश्वरीय इच्छा के अनुसार नियुक्त किया। यद्यपिइसभव्यदृष्टि को अक्सर वास्तविक राजनीतिक परिस्थितियों द्वारा परिचालित किया गया था, यह महत्वपूर्ण बना रहा। इस दृष्टि को प्रसारित करने का एक तरीका वंश वादी इतिहास लेखन के माध्यम से था। मुगल राजाओं ने इतिहास लिखने के लिए अदालत के इतिहासकारों को कमीशन दिया। इन खातों ने सम्राट के समय की घटनाओं को द किया। इसके अलावा, उनके लेखकों ने उपमहाद्वी पके क्षेत्रों से बड़ी मात्रा में जानकारी एकत्र की, ताकि शासकों को उनके शासन को संचालित करने में मदद मिल सके। अंग्रेजी में लिखने वाले आधुनिक इतिहास कारों ने ग्रंथों की इस शैलीको काल क्रम कहा है, क्योंकि वे घटनाओं के निरंतर काला नुक्रमिक अभि लेखको प्रस्तुत करते हैं। मुगलों का इतिहास लिखने के इच्छुक किसी भी विद्वान के लिए इतिहास एक अनिवार्य स्रोत है। एक स्तर पर वेमुगल राज्य की संस्थाओं के बारे में तथ्यात्मक जानकारी के भंडार थे, अदालत के साथ जुड़े व्यक्तियों द्वारा श्रमसाध्य रूप से एकत्र और वर्गीकृत। एक ही समय में इनग्रंथों का अर्थथा किमुगल शासकों ने अपने साम्राज्य पर थोपने का मतलब समझा। इसलिए वे हमें एक झलक देते हैं कि शाही विचारधाराओं का निर्माण और प्रसार कैसे हुआ। यह अध्याय मुगल साम्राज्य के इस समृद्ध और आकर्षक आयाम के काम काज को देखेगा।

मुगल राजवंश का महत्व और आवश्यकताएं

भारत में मुगल वंश की शुरुआत:

- भारत में मुगल साम्राज्य 1526 से 1858 तक रहा। मुगल वंश को मुस्लिम शास कों द्वारा मान्यता प्राप्त थी, जो वर्तमान समय में उज्बे किस्तान से आए थे। भारत में मुगल शासन

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid Peer Reviewed Multidisciplinary International
ISSN:2320-3714
Volume3 Issue3
September 2022
Impact Factor:11.9
Subject Humanities

ने देश को एक एकल इकाई और शासक के रूप में एक जुट किया। मुगल काल के दौरान, कला और वास्तु कला का विकास हुआ और कई आकर्षकस्मारकों का निर्माण किया गया। शासक कुशल योद्धा और कला के प्रशंसक भी थे

मुगलकाल में' उत्तरिया' का उपयोग और डिजाइन:

- मुगल शासन की स्थापना के साथ, फारसी और प्राचीन भारतीय कलात्मक संवेदनाओं के मिश्रण को फारसी प्रभाव के साथ कला, वास्तुकला और कपड़ों में देखा जा सकता है, बहुसंख्यकसिले हुए वस्त्रभार तमें प्रवेश करते हैं, 'प्रतिमा' को 'पजामा' से बदल दिया गया था। पैरों के लिए पोशाक जो विभिन्न प्रकार के थे जो बहुत ढीले से बहुततंग थे। 'उत्तारिया' बनारहा, हालाँकि 'कुर्तस' और 'अंगारक' जैसे विभिन्न अंगर खेजोड़े गए। मुगलम हिलाओं ने कपड़ों की परतें पहनीं और अपने चेहरे को घूंघट से ढक लिया। यह ध्यान दिया जा सकता है कि जलवायु के आधार पर कपड़े सूती, ढीले और सांसलेने योग्य थे।
- मुगलवंश में विला सितावस्त्रशामिलथेजो कला और कविता में रुचिको पूरक थे। कपड़े क रेशों में आमतौर पर 'मलमल', रजतम खमल और ब्रोकेड शामिल होते हैं।

मुगलमुद्रणकामूल

1540 में अफगान शेर शाहसूरी द्वारा हुमायूं को दिल्ली से बाहर निकाल दिया गया, जो पंद्रह साल तक फारस और अफगानिस्तान में निर्वासि तरहा। फारसकेशाहतहमासनेउसेशरणदी और अपने राज्य की वसूली के लिए सैन्य सहायता काभीवादा किया। तहमास अमीर और बेहदसुसंस्कृत थे और उनकी अदालतने शाही वैभव और शक्ति (समुद्रतट, 1987) कोमिसालदी। तबरीज़ के शाह

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN:2320-3714
Volume3 Issue3
September 2022
Impact Factor:11.9
Subject Humanities

तहमास के दरबार में, हुमायूँ ने फ़ारसी कलाकारों आगामिरक, सुल्तान मोहम्मद और मुज़फ़्फ़र अली, प्रसिद्ध बिहज़ाद के विद्यार्थियों के चित्रों को देखा। बादमें वह निज़ामी के खमशाह के चित्रकार मीर सैय्यद अली से मिला। हुमायूँतबरीज़अदालतों के कामों से परिचित हो गया जो पांडुलिपिचित्रों का अत्यधिकविक सितस्कूल था। जब 1549 में हुमायूँ ने अंततः का बुललौट ने के लिए तबरीज़ को छोड़ दिया, तो उस ने शाह के दो बेहतरीन कलाकारों, मीर सैय्यद अली और अब्द-अस-समद (कोसैक, 1997) कोकामपररखा। जब हुमायूँ ने अपना सिंहासन वापस हासिल कर लिया, तो दोनों कलाकार 1555 में भारत आ गए। सभी ज्ञात चित्र जो उसके शासन का लके अंत से हुमायूँ के संरक्षण की तिथि के लिए कुछ निश्चित तासे संबंधित हो सकते हैं, हालाँकि साहित्यिक साक्ष्य उसके कलात्मक हितों के लिए पहले से मौजूद हैं तारीख। हुमायूँ के अधिकांश काल के कार्य या तो वास्तविक घटनाओं के चित्रण या वर्णन हैं। हुमायूँ की दिलचस्पी परिचित लोगों और ऐतिहासिक घटनाओं की छवियों में थी। भारत में मुगल चित्रों का जन्म अकबर (1556-1605) केसंरक्षणकेकारणहुआ है। अकबर ने विषम तत्वों अर्थात से कला का एक नया संश्लेषण बनाया। फारसी मध्य एशियाई और भारतीय, उनके दरबार में एकत्र हुए और परिणाम चित्रों का एक नया स्कूल था जो तकनीक में भारतीय भावना और फारसी में था (रंधावा, 1983)।अकबरकेअधीन, चित्रकलापांडुलिपियों के चित्रण तक ही सीमित थी। कुछ सबसे अच्छे ज्ञात इस प्रकार हैं: हमज़ा नामाया दास्तान-ए आमिर हमज़ा, तूतिनामा, दीवानया दीवान-ए-हाफ़िज़ आदि। अमीर खुसरू, रज़मना, बाबर नामा और अकबर नामा के कुछ नाम भी हैं। हिंदुस्तान के लिए अकबर की सहानुभूति और अपने राज्य के लोगों के बीच समझ को प्रोत्साहित करने की नीति के कारण, हिंदू विषय समान रूप से इष्ट थे और परिणाम स्वरूप, हिंदुओं की महान पुस्तकों का फ़ारसी में

ISSN:2320-3714
Volume3 Issue3
September 2022
Impact Factor:11.9
Subject Humanities

अनुवाद किया गया था। चित्रण के लिए महाभारत और रामायण को लिया गया था। इनमें से अधिकांशस चित्र पांडुलिपियां 1580 से 1600 (वर्मा, 1978) की अवधि की हैं।

निष्कर्ष:

अपने सभी क्षेत्रों और प्रांतों में मुगल साम्राज्य की समस्याओं के लिए सामान्य रूप से लागू होने वाली एकल व्याख्या को खोजना मुश्किल है। इसी तरह के कारणों से मुगल साम्राज्य के सभी हिस्सों पर समान रूप से लागू होने वाले मुगल पतन के दृष्टिकोण को स्वीकार करना मुश्किल है। मुगल साम्राज्य ने केंद्रों और परिधि दोनों की सर्वसम्मति का सबसे अच्छा प्रतिनिधित्व किया। अलग-अलग इलाके अलग-अलग तरह से प्रभावित हुए। जबकि कुछ क्षेत्रों में मुगल कोर के साथ संबंध टूट गए थे, अन्य में उन्हें बरकरार रखा गया था। यह तर्कसंगत था कि विभिन्न क्षेत्रों ने मुगल साम्राज्य से अलग होने के अलग-अलग रास्ते अपनाए। मुगलों का पतन इस प्रकार मुगल केंद्रित दृष्टिकोण की सदस्यता लेने वाले इतिहासकारों के विश्वास से कहीं अधिक जटिल था।

संदर्भ ग्रन्थसूची

- अबूएल - फ़ज़लअल्लामी (1977) I दऐन-आई-अकबरी, एच।ब्लॉकमैन, ओरिएंटल बुक्स रिप्रजेंट कॉर्पोरेशन, नईदिल्ली, वॉल्यूम द्वारा।आई।पी। 93- 102
- बीच, एम।सी।औरएब्बाकोच (1997) किंग्सऑफदवर्ल्ड, दपद्शनामा: रॉयल लाइब्रेरी से इंपीरियल मुगल पांडुलिपि, विंडसरकैसल, अज़ीमुथ
- चंद्रा, एम। (1973) कॉस्टयूम टेक्सटाइल कॉस्मेटिक्स एंड कोइफ़्योरइनएंशिएंट एंड मध्यकालीन इंडिया', ओरिएंटलपब्लिशर्स।दिल्ली।अ। 1, पी। 13-25।

AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN:2320-3714
Volume3 Issue3
September 2022
Impact Factor:11.9
Subject Humanities

- गोएट्ज़, एच। (1958) (मारवाड़ (कुमारसंग्रामसिंहकेसंग्रहमेंजोधपुरसेकुछचित्रोंकेसाथ) ', मार्गसंख्या 2, वॉल्यूमXI, पी।४२ - ४९।
- गोस्वामी, बी.एन. (२००२): पटका: कॉस्ट्यूम एक्सेसरी ऑफ़ द कैलिकोम्यूज़ियम ऑफ टेक्सटाइल्स इंडियन कॉस्टयूम- II ', पी।२४ - ५३।
- शुजाउद्दीन- औरंगज़ेब आलमगीर की कथिनैयी ऐव मनितिया, पी। 45,चंद्र, सतीश, मुगलधार्मिकनीतियां,
- जदुनाथसरकार, फॉल ऑफ़ थेमुगल एम्पायर, वॉल्यूम।मैं, कलकत्ता, 1938; तीसरासंस्करण।कलकत्ता, 1964 और औरंगजेब का इतिहास, खंड।आई-वी, कलकत्ता, 1912,1916,1919, और 1924।
- मुग़ल उत्तर भारत में सामाज्य का साम्राज्य: अवध और पंजाब दिल्ली,
- अतहरअली, दमुगलनोबेलिटी अंडर ऑरंगज़ेब, अलीगढ़, 1966, संशोधितएड।, दिल्ली, 1997।जे.एफ. रिचर्ड्स, गोलकुंडा, ऑक्सफ़ोर्ड में मुग़लकालीनकरण, (1975)
- सतीश चंद्र मध्यकालीन जागीरदारी प्रणाली में, "जगदीरी प्रणाली की समीक्षा ": समाज, जागीरदारी संकट और गाँव, दिल्ली।(1982)
- करेनलियोनार्ड, महान दृढ़ सिद्धांत मुग़ल एम्पायर थे', सोसायटी और हिस्टोरिस्ट में तुलनात्मक अध्ययन।(1979)
- अठारहवीं शताब्दी: क्रांति की क्रांति, ऑक्सफोर्ड, 2003, हरमनगोएट्ज़,
- अठारहवीं और पहले उन्नीसवीं शताब्दियों में भारत की सभ्यता का संकट: द जेनेसिस ऑफ टॉलंडो-मुस्लिम सभ्यता, कलकत्ता, (1938)
- मुजफ्फर आलम और संजय सुब्रमण्यम (सं।), मुगलराज्य, 1526 -1750, दिल्ली(1998)

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume 3 Issue 3
September 2022
Impact Factor: 11.9
Subject Humanities

- **सुशील चौधरी, समृद्धि से पतन तक: अठारहवीं शताब्दी बेंगल, दिल्ली, (1995)**
- **1700-1740 में बंगाल में एएरीजनल ओरिएंटेड रूलिंग ग्रुप का गठन, जर्नलऑफ़एशियन साम्राज्य की महान फर्म थ्योरी ऑफलाइन, इतिहास और समाज में तुलनात्मक अध्ययन, (1979)**

Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, here by, declare that the content of this paper is prepared by mean if any person having copyright issue or patent or anything other wise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website/amendments/updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me isnot correct I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally I have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and the entire content is genuinely mine. If any issue arise related to Plagiarism / Guide Name / Educational Qualification / Designation/Address of my university/college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission / Submission /Copyright / Patent/Submission for any higher degree or Job/ Primary Data/ Secondary Data Issues, I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the data base due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Aadhar/Driving License/Any Identity Proof and Address Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper may be rejected or removed I website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper may be removed from the website or the watermark of remark/actuality may be mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me

Abhimanyu Sharma
Dr. Alim Akhtar Khan